# MP Board Class 11th Special Hindi Sahayak Vachan Solutions Chapter 8 काठमाण्डू दर्शन

### निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए

प्रश्न 1.
हिमालय के विषय में लेखक के विचार लिखिए।
उत्तर:
भारत से नेपाल की हवाई यात्रा गोरखपुर से सीमा पार करके हिमालय की तराई का प्रदेश शुरू होता है। यह प्रदेश वृक्षों का घना प्रदेश है। वृक्षों से ढंके वन लहराते समुद्र का दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

हिमालय की श्रेणियाँ प्रबल आकर्षण की बिन्दु थीं। हिमालय को नगाधिराज हिमालय भी कहा जाता है। इससे भारत की अनेक पुराकथाएँ और उदात्त कल्पनाएँ जुड़ी हुई हैं। कालिदास, प्रसाद, पन्त और दिनकर के अनेक काव्य-विम्ब लेखक की चेतना में अनायास ही उद्‌बुद्ध होने लगे।

कालिदास ने तो हिमालय को पृथ्वी का मानदण्ड कह दिया। जो उनकी कल्पना के विराट स्वरूप का दिग्दर्शन है। हिमालय का सम्बन्ध शंकर भगवान से है, अतः इन प्रसंगों को कालिदास ने आनन्द-कल्पना के अंग बनाकर भव्य प्रस्तुति की है अपने ग्रन्थों में। कवि ने अपनी भक्ति के फूल इस हिमालय के सैकड़ों-हजारों बिम्बों के प्रति अर्पित किए हैं। परमश्रद्धेय जयशंकर प्रसाद जी ने तो हिमालय को प्रलय के बाद आर्विभूत प्रथम रचना के रूप में चित्रित किया है। हिमालय अपने उत्तुंग शिखरों से सुमण्डित दिगन्तव्यापी कलेवर से संयुक्त होने से उसकी प्रलय समाधि अभी भी भंग नहीं हुई है।

प्रकृति के कोमल चित्रों को उभारने वाले पंत जैसे महान् प्रकृति कवि के भव्य चित्र लेखक के मानस पटल पर अंकित होने लगे। कालिदास की अमर कृति 'कुमार सम्भव' के उदात्त कोमल प्रसंग चलचित्र के समान लेखक के मन में फेरी लगाने लगे। इस हिमालय के किसी प्रान्तर की निमृत गुफाओं में उमा ने शंकर को वरण करने की अभिलाषा से तपस्या की होगी। सम्भवतः यहीं कहीं निकटवर्ती कैलाश पर्वत के किसी शिखर पर त्रिनेत्र (शंकर) ने अपने तीसरे नेत्र की प्रचण्ड अग्नि शिखाओं से कामदेव को भस्म किया होगा।

इसी बीच लेखक को अपनी मातृभूमि, भारत के सीमा सम्बन्धी संकटों की स्मृति कौंधने लगी और महाकवि 'दिनकर' की ओजस्वी वाणी उसके कानों में इस प्रकार गूंजने लगी-

*"जिसके द्वारों पर खड़ा क्रान्त,*
*सीमापति! तूने की पुकार,*
*पद दलित इसे करना पीछे,*
*पहले ले मेरा सिर उतार।"*

हिमालय पर्वत को पर्वतों का राजा कहते हैं। नग का अर्थ पर्वत होता है, अतः इसे नगाधिराज भी सम्बोधित करते हैं। लेखक अपने नाम के साथ भी हिमालय का सम्बन्ध जोड़ता है-नगेन्द्र-नग + इन्द्र = पर्वतों का राजा। लेखक की कल्पना में हिमालय देवभूमि, देवात्मा, नगाधिराज, पृथ्वी का मानदण्ड न जाने कितने रूपों और नामों से सम्बोधित किए जाते हुए विराजमान हैं।

प्रश्न 2.
नेपाल में लेखक के ठहरने की क्या व्यवस्था थी? संक्षिप्त में लिखिए।
उत्तर:
नेपाल में ठहरने की व्यवस्था विश्वविद्यालय की ओर से होटल में की गई थी। किन्तु लेखक के मित्र ने इस प्रस्ताव को रद्द कर दिया। लेखक से उसके मित्र महोदय ने आग्रह किया कि वे उसके (मित्र के) घर पर ही चलें। वहाँ ठहरें। मित्र के आग्रह से लेखक ने उसके घर पर ही ठहरना स्वीकार किया। लेखक महोदय मित्र के घर पहुँच गए। चाय पीते-पीते सन्ध्या हो गई। अतः शहर में ही घूमने का कार्यक्रम बनाया। काठमाण्डू-नया शहर और पुराना शहर-दो भागों में अवस्थित है। इस तरह अन्य बहुत सी बातें करते हुए रात्रिकाल को विश्राम किया। दूसरे दिन दर्शनीय स्थलों के देखने के लिए निश्चित किया। मित्र के आवास पर निवास चित्ताकर्षक और प्रसन्नता देने वाला रहा।

प्रश्न 3.
काठमाण्डू भ्रमण के बाद लेखक के अनुभव अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तर:
काठमाण्डू में काष्ठमण्डप शहर के मध्यभाग में स्थित है। यह काष्ठमण्डप महावृक्ष के काष्ठ से निर्मित है। शुरू में यह यात्रियों का विश्राम गृह था। धीरे-धीरे देव भावना का समावेश हो जाने पर देवस्थान बन गया। इसमें कोई भी शिल्प सौन्दर्य नहीं है। कृष्ण मंदिर बागमती नदी के पास नगर से कुछ मील की दूरी पर है। यह मंदिर दो हजार वर्ष पुराना है। इसके निर्माण में चूने का प्रयोग नहीं किया गया है। वास्तुकला का अद्‌भुत चमत्कार है। स्वयंभूनाथ का मंदिर पर्वत खण्ड के विराट् भूभाग पर स्थित है। इसके विग्रह में चारों ओर आँखें लगी हैं जो चतुर्दिक दृकपात करती हैं और नगर को सुरक्षा देती हैं।

काठमाण्डू दर्शन और भ्रमण के बाद लेखक का अनुभव है कि भारत और नेपाल दोनों देश सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से अति समृद्ध देश हैं। यह शैव, शाक्त और बौद्ध धर्मों का केन्द्र रहा है। बौद्ध, शाक्त और शैव-हिन्दू धर्म के विशिष्ट सम्प्रदाय हैं। नेपाल विश्व में एक ही हिन्दू राज्य है। यह न तो भारत की तरह धर्मनिरपेक्ष हैं और न पाकिस्तान की तरह धर्म प्रतिबद्ध। नेपाल इस बात का प्रमाण है कि हिन्दू धर्म को उसके सहज उदार रूप में स्वीकार कर लेने के बाद धर्म निरपेक्षता उतनी अनिवार्य नहीं रहती। अनेक हिन्दू-प्रथाएँ जो आज भारत में विलुप्त हैं, वे आज भी वहाँ की व्यावहारिक संस्कृति का अंग हैं। नेपाल और भारत के सम्बन्ध अत्यन्त आत्मीय तथा सौहार्द्रपूर्ण हैं-संस्कृति और धर्म की समानता चिरकाल से दोनों राष्ट्रों को स्नेहबन्ध पान में बाँधे हुए है।

प्रश्न 4.
भगवान पशुपतिनाथ के दर्शन के समय लेखक ने क्या-क्या देखा? लिखिए।
उत्तर:
सन् 1967 ई. के मार्च की नौवीं तारीख थी। उस दिन लेखक का जन्मदिन था तथा महाशिव रात्रि का पर्व भी था। अतः रात्रि को भगवान पशुपतिनाथ के दर्शन का कार्यक्रम बनाया गया। लेखक अपने मित्र के सहयोग से मन्दिर परिसर में गाड़ी से पहुँच सका। मंदिर के प्रांगण में नंगे पैर ही प्रवेश करना था, वहाँ कीचड़ थी, अतः मोजे पहनने की सुविधा नहीं थी। साधारण रूप से लेखक को जाड़े की रात्रि में यह सब कष्ट साध्य तो था ही लेकिन अब तो वहाँ लेखक के लिए कोई अन्य गति भी नहीं थी। लेखक से मित्र श्रद्धालु बोला-भगवान पशुपतिनाथ के मंदिर में किसी बात का भी डर नहीं है। लेखक और उनके मित्र महोदय धक्के-मुक्के खाते देव-विग्रह के पास पहुँच ही गए। वहाँ प्रत्येक श्रद्धालु अपनी श्रद्धा और भक्ति भाव से भगवान को प्रणाम कर रहा था और आगे बढ़ रहा था। वहाँ अधिक समय तक रुकने की कोई सम्भावना नहीं थी।

https://www.evidyarthi.in/

लेखक ने देखा कि भगवान पशुपतिनाथ के मन्दिर के परिसर में भक्तों की अपार भीड़ सभी दिशाओं से उमड़ पड़ रही थी। मन्दिर के चारों ओर दूर-दूर तक तीर्थयात्रियों के तम्बू लगे हुए थे। यात्रियों की सुविधा के लिए दुकाने भी सजी हुई थीं जिनसे यात्रीजन अपनी आवश्यक वस्तुएँ खरीद सकते थे।

प्रश्न 5.
नेपाल के 'त्रिभुवन विश्वविद्यालय' का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
उत्तर:
नेपाल का त्रिभुवन विश्वविद्यालय काठमांडू से कई मील दूर कीर्तिपुर नामक उपनगर में बन रहा है। इसका केवल प्रशासनिक खंड व दीक्षांत भवन बन चुके थे। विज्ञान विभाग की इमारतें बन रही थीं। विश्वविद्यालय के प्रवेश द्वार पर नागर अक्षरों में त्रिभुवन विश्वविद्यालय लिखा हुआ है और दीर्घा के भीतर सामने की दीवार पर नेपाली भाषा में उसकी स्थापना का संक्षिप्त इतिवृत्त दिया हुआ है। विश्वविद्यालय परिदृश्य अत्यन्त भव्य है। वह विशाल भूखण्ड, जिस पर विश्वविद्यालय स्थित है, पर्वतमाला से घिरा हुआ अर्द्धचन्द्राकार है।

निर्माण कार्य पूरा होने पर त्रिभुवन विश्वविद्यालय का परिवेश प्राकृतिक और मानवीय कला के संयोग से एक अपूर्व गरिमा से मण्डित हो जाएगा। विश्वविद्यालय की स्थापना सन् 1960 ई. में हुई थी। इसके अन्तर्गत कला, सामाजिक विज्ञान और भौतिक विज्ञान के प्रायः सभी प्रमुख विभाग और देश के विभिन्न भागों में स्थापित 35-36 स्नातक विद्यालय हैं। विभिन्न विषयों के लिए नेपाल के सुयोग्य नागरिकों के अतिरिक्त, भारत और अमरीका आदि के विशेषज्ञ विद्वानों की नियुक्ति की जाती है।

भारत सहयोग-संस्थान की ओर से 20-25 भारतीय प्राध्यापक वहाँ भिन्न-भिन्न विभागों में कार्य कर रहे हैं। हिन्दी विभाग में एक आचार्य (प्रोफेसर) एक उपाचार्य (रीडर) तथा कई प्राध्यापक हैं। नेपाल के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण हिन्दी और संस्कृत में वहाँ के छात्रों की विशेष रुचि है। कुलपति महादेय के अनुरोध पर मैंने पाठ्यक्रम और शोध व्यवस्था आदि के विषय में हिन्दी विभाग के सहयोगी-बन्धुओं से विचार-विनिमय किया और तुलनात्मक अनुसंधान पर विशेष बल देने पर परामर्श किया। नेपाल के प्राचीन ग्रंथागारों में अपार सामग्री भरी पड़ी है। वह प्रायः संस्कृत और पालि भाषा में है। परन्तु मैथिली हिन्दी के ग्रंथों का भी संग्रह काफी है। उनका सम्पादन और प्रकाशन निश्चय ही उपयोगी होगा।